IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

1857 की क्रांति में बिहार के क्रांतिकारियों का योगदान: एक विस्तृत शोध विश्लेषण

हिमांशु कुमार राय

शोधार्थी, स्नातकोत्तर इतिहास विभाग,

जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा, सारण

सारांश (Abstract)

प्रस्तुत शोध पत्र 1857 के प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में बिहार की केंद्रीय भूमिका और यहाँ के क्रांतिकारियों के सामरिक योगदान का विवेचन करता है। बिहार इस महासंग्राम का वह महत्वपूर्ण क्षेत्र था जहाँ विद्रोह केवल सैन्य छावनियों तक सीमित न रहकर एक व्यापक जन-आंदोलन में परिवर्तित हो गया। जगदीशपुर के अस्सी वर्षीय योद्धा बाबू कुंवर सिंह के अदम्य साहस और युद्ध कौशल ने न केवल बिहार बल्कि उत्तर प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में ब्रिटिश सत्ता की नींव हिला दी। वहीं, पटना के साधारण पुस्तक विक्रेता पीर अली खां का बलिदान नागरिक प्रतिरोध का सर्वोच्च उदाहरण बना। यह लेख दानापुर विद्रोह, शाहाबाद का घेराव और कैमूर की पहाड़ियों में अमर सिंह द्वारा संचालित छापामार युद्ध पद्धतियों का विश्लेषण करता है। शोध के माध्यम से यह भी स्पष्ट किया गया है कि कैसे बिहार के क्रांतिकारियों ने सीमित संसाधनों के बावजूद औपनिवेशिक सत्ता के आर्थिक और प्रशासनिक शोषण के विरुद्ध एक सुदृढ़ वैचारिक और सैन्य मोर्चा खड़ा किया।

कीवर्ड (Keywords)

1857 का विद्रोह, बिहार के क्रांतिकारी, बाबू कुंवर सिंह, पीर अली खां, अमर सिंह, जगदीशपुर, दानापुर विद्रोह, औपनिवेशिक प्रतिरोध, स्वतंत्रता संग्राम, शाहाबाद।

1. प्रस्तावना (Introduction)

1857 की क्रांति भारतीय इतिहास की वह युगांतरकारी घटना थी जिसने पहली बार ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की संप्रभुता को सामूहिक चुनौती दी। इस संग्राम में बिहार की भूमिका अत्यंत निर्णायक और प्रेरणादायक रही है। बिहार में इस विद्रोह की जड़ें औपनिवेशिक प्रशासनिक नीतियों के प्रति गहरे असंतोष में निहित थीं, जो विशेष रूप से 1765 में दीवानी अधिकार प्राप्त करने के बाद से ही पनप रही थीं ।

बिहार के क्रांतिकारियों का योगदान इसलिए विशिष्ट है क्योंकि यहाँ विद्रोह में केवल सैनिक शामिल नहीं थे, बल्कि इसमें स्थानीय जमींदार, किसान, बुद्धिजीवी और आम शहरी नागरिक भी बड़ी संख्या में सहभागी बने। जैसा कि इतिहासकार कालीकिंकर दत्ता ने उल्लेख किया है, बिहार में विद्रोह का स्वरूप "राष्ट्रीय" था, जहाँ हिंदू और मुसलमानों ने साझा लक्ष्य के लिए एकजुट होकर संघर्ष किया । इस शोध लेख में हम बिहार के उन महान सेनानियों के योगदान की समीक्षा करेंगे जिन्होंने अपने रक्त से स्वाधीनता की नींव रखी।

2. विद्रोह का प्रस्फुटन: रोहिणी और पटना के आरंभिक संघर्ष

बिहार (तत्कालिक अविभाजित) में विद्रोह की प्रथम चिंगारी 12 जून 1857 को देवघर जिले के **रोहिणी** गांव से उठी। यहाँ 32वीं नेटिव इन्फैंट्री के सैनिकों—सलामत अली, अमानत अली और शेख हारून—ने विद्रोह कर लेफ्टिनेंट नॉर्मन लेस्ली की हत्या कर दी। यद्यपि इन्हें तत्काल फांसी दे दी गई, परंतु इसने संपूर्ण बिहार में क्रांति की ज्वाला प्रज्वलित कर दी।

2.1 पीर अली खां: पटना का नागरिक प्रतिरोध

पटना में विद्रोह का नेतृत्व एक साहसी पुस्तक विक्रेता **पीर अली खां** ने किया। 3 जुलाई 1857 को पीर अली ने अपने साथियों के साथ पटना सिटी के गुलजारबाग स्थित ब्रिटिश प्रशासनिक भवनों पर हमला किया और अफीम एजेंट डॉ. लायल की हत्या कर दी। कमिश्नर विलियम टेलर ने इस विद्रोह का अत्यंत क्रूरता से दमन किया। पीर अली को 7 जुलाई 1857 को सरेआम फांसी दे दी गई। फांसी से पूर्व उनके अंतिम शब्द—"तुम हमें फांसी पर लटका सकते हो, पर हमारे आदर्शों को नहीं"—बिहार के क्रांतिकारियों के लिए मंत्र बन गए।

3. दानापुर विद्रोह और बाबू कुंवर सिंह का ऐतिहासिक नेतृत्व

25 जुलाई 1857 को दानापुर छावनी की तीन रेजिमेंटों (7वीं, 8वीं और 40वीं) ने विद्रोह कर दिया। ये विद्रोही सैनिक सोन नदी पार कर शाहाबाद पहुँचे और जगदीशपुर के महान जमींदार **बाबू कुंवर सिंह** से नेतृत्व संभालने का आग्रह किया।

3.1 कुंवर सिंह: जगदीशपुर का शेर

अस्सी वर्ष की अवस्था में भी बाबू कुंवर सिंह ने विद्रोह की कमान थामी। वे 1857 की क्रांति के सबसे कुशल सैन्य रणनीतिकार माने जाते हैं। कुंवर सिंह ने जगदीशपुर में अस्त्र-शस्त्र बनाने का कारखाना स्थापित किया और लगभग 20,000 सैनिकों की एक सुदृढ़ सेना तैयार की। 27 जुलाई 1857 को उन्होंने आरा नगर पर कब्जा कर लिया और वहां के खजाने को मुक्त कराया।
कुंवर सिंह की युद्ध कला का लोहा अंग्रेज सेनापतियों ने भी माना। उन्होंने कैप्टन डनबर और कैप्टन ली ग्रैंड जैसे अनुभवी अंग्रेज अधिकारियों को करारी शिकस्त दी। जब गंगा पार करते समय वे घायल हुए, तो उन्होंने बिना हिचकिचाहट अपना हाथ काटकर माँ गंगा को अर्पित कर दिया। 23 अप्रैल 1858 को अंग्रेजों पर अंतिम विजय प्राप्त करने के तीन दिन बाद, 26 अप्रैल 1858 को इस महानायक का निधन हुआ।

4. अमर सिंह और छापामार युद्ध की निरंतरता

कुंवर सिंह की मृत्यु के बाद क्रांति की मशाल उनके भाई **अमर सिंह** ने थामे रखी। अमर सिंह ने कैमूर की दुर्गम पहाड़ियों को अपना केंद्र बनाया और ब्रिटिश सेना के विरुद्ध लंबे समय तक **छापामार युद्ध (Guerrilla Warfare)** जारी रखा।
अमर सिंह की रणनीतिक कुशलता का प्रमाण यह था कि उन्होंने शाहाबाद जिले में एक समांतर सरकार का गठन किया और सासाराम क्षेत्र में ब्रिटिश संचार व्यवस्था को पूरी तरह ठप कर दिया। उनकी इस सैन्य पद्धति ने अंग्रेजों को इतना परेशान किया कि वे उन्हें लंबे समय तक पकड़ने में विफल रहे। अमर सिंह अंततः अक्टूबर 1859 में नेपाल की तराई में चले गए, जहाँ से उन्होंने अंतिम समय तक प्रतिरोध जारी रखा।

5. बिहार के अन्य क्षेत्रीय क्रांतिकारियों का योगदान

विद्रोह की आग बिहार के हर कोने में व्याप्त थी, जहाँ स्थानीय नायकों ने अभूतपूर्व वीरता का परिचय दिया:

- **वारिस अली (तिरहुत):** तिरहुत के पुलिस जमादार वारिस अली ने मुजफ्फरपुर क्षेत्र में अंग्रेजों के विरुद्ध षडयंत्र रचा। उन्हें 6 जुलाई 1857 को विद्रोहियों से पत्राचार करने के आरोप में फांसी दे दी गई।
- **हैदर अली खान (राजगीर):** इन्होंने राजगीर क्षेत्र में विद्रोह का नेतृत्व किया और कुछ समय के लिए इस क्षेत्र को ब्रिटिश नियंत्रण से मुक्त कराया। उन्हें 9 अक्टूबर 1857 को फांसी दी गई।
- **जिवधर सिंह (अरवल):** गया और अरवल क्षेत्र में जिवधर सिंह ने सात सौ से अधिक विद्रोहियों के साथ मिलकर अंग्रेजों को कड़ी चुनौती दी।
- **सरनाम सिंह (रोहतास):** रोहतास के क्षेत्र में सरनाम सिंह ने विद्रोहियों का संगठन किया और जुलाई 1858 में शहादत प्राप्त की।
- **निशान सिंह और हरकिशन सिंह:** ये कुंवर सिंह के अत्यंत विश्वसनीय सेनापति थे। हरकिशन सिंह की रणनीतिक सलाह कुंवर सिंह की प्रारंभिक सफलताओं का मुख्य आधार मानी जाती है।

6. सामाजिक-आर्थिक कारक और जन-भागीदारी

बिहार में क्रांतिकारियों की सफलता का एक मुख्य कारण यहाँ का सामाजिक और आर्थिक परिवेश था। अंग्रेजों की शोषणकारी भू-राजस्व नीतियों और नील एवं अफीम की जबरन खेती (तीनकठिया प्रथा) ने किसानों को विद्रोह के लिए प्रेरित किया।

- **नीलहे बागान मालिकों के विरुद्ध संघर्ष:** बिहार के किसानों ने क्रांतिकारियों का साथ दिया क्योंकि वे ब्रिटिश नीलहे साहबों के अत्याचारों से त्रस्त थे।
- **सांप्रदायिक एकता:** बिहार में विद्रोह हिंदू-मुस्लिम एकता का अनुपम उदाहरण था। जगदीशपुर के राजपूत सैनिकों और पटना के वहाबी क्रांतिकारियों ने कंधे से कंधा मिलाकर संघर्ष किया ।

7. विश्लेषण: बिहार में विद्रोह की विफलता के कारण

यद्यपि बिहार के क्रांतिकारियों ने अदम्य साहस दिखाया, परंतु कुछ कारणों से यह आंदोलन पूर्णतः सफल नहीं हो सका:

1. **संसाधनों का अभाव:** आधुनिक हथियारों के सामने पारंपरिक हथियार और सीमित रसद भारी पड़े।
2. **समन्वय की कमी:** विभिन्न क्षेत्रों के विद्रोहों के बीच केंद्रीय नेतृत्व और प्रभावी संचार तंत्र का अभाव रहा ।
3. **स्थानीय जमींदारों का विश्वासघात:** जबकि कुंवर सिंह जैसे कुछ जमींदार लड़े, परंतु शाहाबाद और तिरहुत के कई बड़े जमींदार अपनी रियासतों की रक्षा के लिए अंग्रेजों के वफादार बने रहे।

8. निष्कर्ष

1857 की क्रांति में बिहार के क्रांतिकारियों का योगदान केवल क्षेत्रीय विद्रोह नहीं था, बल्कि यह भारतीय राष्ट्रीय चेतना के उदय की एक महत्वपूर्ण कड़ी थी। बाबू कुंवर सिंह की वीरता आज भी बिहार की लोक-संस्कृति और लोकगीतों में जीवंत है। पीर अली खां जैसे नायकों ने सिद्ध किया कि स्वाधीनता केवल राजाओं का नहीं बल्कि जन-जन का अधिकार है।

यद्यपि यह विद्रोह तात्कालिक रूप से दबा दिया गया, परंतु बिहार के इन बलिदानों ने वह वैचारिक आधार तैयार किया जिससे भविष्य में महात्मा गांधी का चंपारण सत्याग्रह और 1942 का 'भारत छोड़ो' आंदोलन सफल हो सका। बिहार की धरती पर बहा क्रांतिकारियों का रक्त भारत की पूर्ण स्वतंत्रता का मार्ग प्रशस्त करने में मील का पत्थर साबित हुआ।

संदर्भ सूची

1. अंसारी, जमील हसन। "1857 की जनक्रांति में पीर अली की भूमिका"। *ऑल रिसर्च जर्नल*, खंड 3, अंक 10, 2017।
2. केसरी, बी.पी.। *झारखंड (अविभाजित बिहार) के शहीद*। नागपुरी भाषा संस्थान, 2010।
3. चौधरी, प्रसन्न कुमार और श्रीकांत। *1857: बिहार-झारखंड में महायुद्ध*। राजकमल प्रकाशन, 2008।
4. झा, जे.सी.। *छोटानागपुर का कोल विद्रोह (ऐतिहासिक पृष्ठभूमि)*। बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी।
5. दत्ता, कालीकिंकर। *बिहार में स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास, खंड-1*। के.पी. जायसवाल शोध संस्थान, 1957।
6. दत्ता, कालीकिंकर। *कुंवर सिंह और अमर सिंह की जीवनी*। के.पी. जायसवाल शोध संस्थान, 1984।
7. "दानापुर विद्रोह और शाहाबाद का घेराव"। *विकासपीडिया*, शिक्षा विभाग, बिहार।
8. मेहता, अशोक। *1857: महान विद्रोह* (हिंदी अनुवाद), राजकमल प्रकाशन।
9. महतो, शैलेन्द्र। *बिहार-झारखंड की समरगाथा*। अनुज्ञा बुक्स, 2011।
10. मंडल, अशोक कुमार। *1857 की क्रांति का इतिहास*। 2014।
11. मजूमदार, आर.सी.। *1857 का भारतीय विद्रोह* (हिंदी अनुवाद), फर्म के.एल. मुखोपाध्याय, 1962।
12. विरोत्तम, बलमुकुंद। *बिहार का इतिहास और संस्कृति*। बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, 1990।
13. सावरकर, विनायक दामोदर। *1857 का भारतीय स्वातंत्र्य समर*। (हिंदी अनुवाद)।
14. सिंह, के.एस.। *भारतीय समाज में जनजातीय विद्रोह*। वाणी प्रकाशन, 1985।
15. शर्मा, राम शरण। *बिहार का आधुनिक इतिहास*। (1857 संदर्भ), बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी।
16. "शहीद पीर अली खां: पटना का बेखौफ क्रांतिकारी"। *द क्रेडिबल हिस्ट्री*, जून 2023।
17. "तिरहुत में विद्रोह: वारिस अली की शहादत"। *द क्रेडिबल हिस्ट्री*, सितंबर 2024।
18. "बाबू वीर कुंवर सिंह: जगदीशपुर का शेर"। *संसद अभिलेख*, अप्रैल 2022।
19. "1857 के अनाम शहीद: गया और अरवल का संघर्ष"। *प्रभात खबर*, अगस्त 2020।
20. "बिहार में 1857 का विप्लव: सामाजिक और आर्थिक विश्लेषण"। *दृष्टि आईएएस शोध पत्र*, 2025।